स्वर्गलोक जिनालय विधान

(विमान पंक्ति विधान)

माण्डला

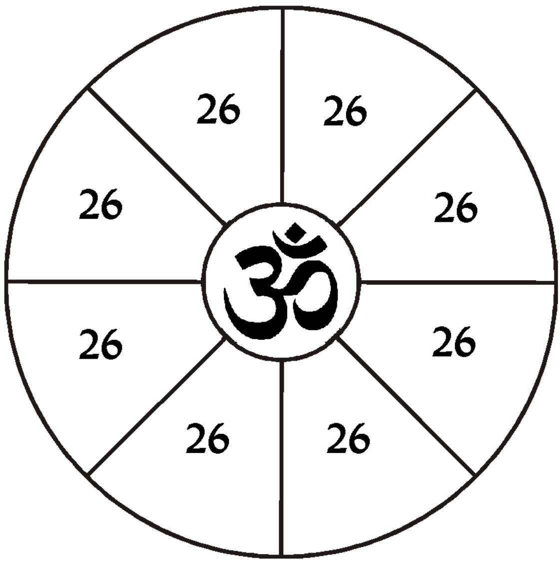

अर्घ्यावली

कुल = 26 × 8 = 208 अर्घ्य

रचयिता

परम पूज्य आचार्य

श्री 108 विशदसागर जी महाराज

पुण्यार्जक

स्व. श्री अनुराग जैन पुत्र स्व. श्री यतीन्द्रनाथ जैन वैद्य जी

की पुण्य स्मृति में वैद्य जी परिवार, एटा उ०प्र०

विशद हृदय के विशद उद्‌गार

दोहा - पंक्ती बद्ध विमान में, है देवों का वास।
जिनगृह जिन की अर्चना, से हो पूरी आस।।

जैन सिद्धान्त अनादि अनंत है, जैनधर्म का मूल ॐ कारमयी दिव्य देशना है जो अर्हंत के मुखारविंद से या सर्वांगसे खिरती है जिसमें सम्पूर्ण विश्व का सार समाया है। ॐ में तीनों लोक का ज्ञान होता है अ - अधो, उ - ऊर्ध्वलोक, म - मध्यलोक में तीनों लोकों में श्री जिनालयों का उल्लेख शास्त्रों में प्राप्त है। प्रथम अधोलोक की प्रथम पृथ्वी के खरभाग में 9 प्रकार के भवनवासी, 7 प्रकार के व्यंतर देवों के स्थान हैं तथा पकभाग में असुर कुमार, भवनवासी, राक्षस देव व्यंतर का निवास है। मध्यलोक में भी गिरितरु आदि पर अकृत्रिम चैत्यालय स्थित हैं और ऊर्ध्वलोक में 16 स्वर्ग, 9 ग्रैवेयक, 9 अनुदिश, 5 अनुत्तरवासी देवों के विमान 3 प्रकार के हैं - 1. इन्द्रक, 2. पंक्तिबद्ध, 3. प्रकीर्णक। सभी में जिनालय स्थित हैं उन जिनालयों की परोक्ष वंदना के भाव से आचार्यों ने विमान पंक्ति व्रत का उल्लेख किया है। आज के पूर्व साधू श्रावक यह व्रत भक्ति भाव से करते आए हैं, आज भी कर रहे हैं। व्रत का उद्यापन करने की भावना से लघु विमान पंक्ति व्रत उद्यापन का संस्कृत में विधान है जिसका हिन्दी रूपान्तर करके रचना हमारे द्वारा पूर्व की जा चुकी है पश्चात् विमान पंक्ति व्रत विधान की रचना का भाव आया और यह विधान तैयार किया गया जिसमें लगभग 214 अर्घ्य पूजन सहित हैं। यह व्रत बहुत ही पुण्य वर्धक है। सभी सद्श्रावकों को भक्ति भाव से करके पुण्य का अर्चन करना चाहिए साथ ही उद्यापन पर यह विधान करके पुण्य का अर्जन कर परम्परा से मुक्ती की प्राप्ति करते हुए 'विशद' सुख के भागी बनें। इस कार्य में पूज्य गुरुवर का आशीर्वाद प्राप्त है एवं इसमें जो सहयोगी बने उनके लिए आशीर्वाद है।

आचार्य विशदसागर
27-7-20 कंपिल जी (उ.प्र.)

स्वर्ग की सीढ़ी है यह स्वर्ग लोक विधान

पृथ्वी तल से सात सौ नब्बे योजन ऊपर चलकर आकाश में सबसे नीचे तारा स्थित हैं। आकाश में ज्योतिष पटल सात सौ नब्बे योजन की ऊँचाई से शुरू होकर नौ सौ योजन तक हैं। सूर्य, चन्द्रमा नक्षत्र, ग्रह और तारा ये पाँच प्रकार के ज्योतिर्विमान हैं। सुमेरू पर्वत की चूलिका के साथ ऊर्ध्वलोक शुरु होता है। चूलिका के ऊपर-ऊपर स्वर्ग तथा ग्रैवेयक आदि हैं। सौधर्म, ऐशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, बह्मोत्तर लान्तव, कापिष्ट, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्त्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत ये सोलह कल्प कहे गये हैं। इनकी रचना दक्षिण और उत्तर के भेद से दो-दो के जोड़े रूप में है, उनके ऊपर अधोग्रैवेयक, मध्यम ग्रैवेयक और उपरिम ग्रैवेयक के भेद से तीन प्रकार के ग्रैवेयक हैं। इन तीनों ग्रैवेयकों के भी आदि, मध्य और ऊर्ध्व भेद से तीन-तीन भेद होते हैं। इन नव ग्रैवेयकों के नौ पटल हैं उसके आगे नौ अनुदिश और अनुदिश के आगे पाँच अनुत्तर विमान हैं। अनुदिश और अनुत्तर विमानों का एक-एक पटल है। अन्त में ईषत्प्राग्भार भूमि है। उसी के अन्त तक ऊर्ध्वलोक कहलाता है। स्वर्गों के समस्त विमान चौरासी लाख सत्तानवे हजार तेईस हैं। प्रत्येक विमान में चैत्यालय होने से चैत्यालयों की संख्या भी चौरासी लाख सत्तावने हजार तेईस ही है। इनमें त्रेसठ पटल और त्रेसठ ही इन्द्रक विमान हैं। इन्द्रक विमानों का समूह पटलों के मध्य ऊर्ध्व रूप से स्थित है। उनमें शुरू के इन्द्रक का नाम ऋतु है। उसकी चारों दिशाओं में त्रेसठ-त्रेसठ श्रेणीबद्ध विमान हैं और आगे प्रत्येक इन्द्रक में एक-एक विमान कम होता जाता हैं। सौधर्म और ऐशान नामक प्रारम्भ के दो स्वर्गों में ऋतु, विमल, चन्द्र, वल्गु, वीर, अरुण, नन्दन, नलिन, कांचन, रोहित, चंचल, मारुत, ऋद्धीश, वैडूर्य, रुचक, रुचिर, अर्क, स्फटिक, तपनीयक, मेघ, भद्र, हरिद्र, पद्म लोहिताक्ष, वज्र, नंद्यावर्त्त, प्रभंकर, प्रष्ठक, गज, प्रभ ये इक्तीस पटल हैं। सानत्कुमार माहेन्द्र स्वर्ग में अंजन, वनमाल, नाग, गरुड़, लागंल, बलभद्र, चक्र, ये सात इन्द्रक विमान हैं, लान्तव स्वर्ग में ब्रह्महृदय, लान्तव ये दो इन्द्रक विमान है। महाशुक्र में-शुक्र सहस्त्रार में शताख्य आनत में आनत, प्राणत और पुष्पक ये तीन, अच्युत में सानुकार, आरण और अच्युत ये तीन इन्द्रक विमान है, अधोग्रैवेयक में-सुदर्शन अमोघ सुप्रबुद्ध ये तीन, मध्यम ग्रैवेयक में-यशोधर,

सुभद्र, सुविशाल ये तीन, ऊर्ध्व ग्रैवेयक में-सुमन, सौमनस्य, प्रीतिंकर ये तीन इन्द्रक विमान हैं नौ अनुदिशों के मध्य में आदित्य नाम का एक इन्द्रक विमान है। और पाँच अनुत्तरों में सर्वार्थसिद्धि नाम का एक इन्द्रक विमान है। सौधर्म स्वर्ग में बत्तीस लाख, ऐशान में अट्ठाईस लाख, सानत्कुमार में बारह लाख, माहेन्द्र में आठ लाख, ब्रह्म स्वर्ग में दो लाख छियानवे हजार, ब्रह्म स्वर्ग में, एक लाख चार हजार, लान्तव में पच्चीस हजार बयालीस, कापिष्ट में चौबीस हज्जार नौ सौ अट्ठावन, शुक्र में बीस हजार बीस, महाशुक्र में उन्नीस हज्जार नौ सौ अस्सी, शतार में तीन हजार उन्नीस, सहस्त्रार में उन्नीस कम तीन हजार, आनत-प्राणत में चार सौ चालीस तथा आरण-अच्युत में दो सौ साठ विमान हैं। ग्रैवेयकों के पहले त्रिक में एक सौ ग्यारह, दूसरे त्रिक में एक सौ सात, तीसरे त्रिक में एकानवे और अनुदिशों में नो विमान हैं। अनुदिशों में आदित्य नाम का विमान बीच में है और उसकी पूर्व आदि दिशाओं तथा विदिशाओं मे क्रम से अर्चि, अर्चि मालिनी, वज्र वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूपक, अंक, स्फटिक ये आठ विमान हैं। अनुत्तर विमानों में सर्वार्थ सिद्धि विमान बीच में हैं और उसकी पूर्वादि चार दिशाओं में विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित ये चार विमान स्थित हैं। सब श्रेणी बद्ध विमान मिलकर आठ हजार एक सौ सताईस हैं। उसमें सौधर्म युगल में श्रेणीबद्ध विमान चार हजार चार सौ पंचानवे, ऐशान में एक हजार चार सौ अट्ठासी, सनत कुमार में छह सौ सोलह, माहेन्द्र में दो सौ तीन, ब्रहम युगल में दौ सौ छियासी, ब्रह्मोत्तर में चौरानवे, लान्तव में एक सौ पच्चीस, कापिष्ठ में इकतालीस, शुक्र में अट्ठावन, महाशुक्र में उन्नीस, शतार में पचपन, सहस्त्रार में अठारह, आनत में एक सौ सैतालिस, प्राणत में अड़तालिस, सहस्त्रार में अठारह, आनत में एक सौ सैतालिस, प्राणत में अड़तालिस, आरण में एक सौ बीस और अच्युत में उन्तालीस कहे जाते हैं। अधोग्रैवेयक के तीन विमानों में क्रम से पैंतालिस, इकतालीस, सैतीस, मध्यम ग्रैवेयक के तीन विमानों में क्रम से तैंतीस, उन्तीस, पच्चीस तथा ऊर्ध्व ग्रैवेयक के तीन विमानों में क्रम से इक्कीस, सत्तरह, तेरह, और अनुत्तरों में पाँच श्रेणीबद्ध विमान हैं। उन विमानों में संख्यात योजन विस्तार वाले विमानों की संख्या सौधर्म स्वर्ग में छह लाख चालीस हजार, ऐशान स्वर्ग में पाँच लाख साठ हजार, सनत्कुमार स्वर्ग में दो लाख चालीस हजार, माहेन्द्र स्वर्ग में एक लाख साठ हजार ब्रह्म-ब्रहमोत्तर स्वर्ग में अस्सी हजार, लान्तव

और कापिष्ठ स्वर्ग में दश हजार, शुक्र स्वर्ग में चार हजार, महाशुक्र स्वर्ग में तीन हजार नौ सौ छियानवें, शतार-सहस्त्रार स्वर्ग में बारह सौ, आनत-प्राणत स्वर्ग में अठासी और आरण-अच्युत स्वर्ग में बावन है। इन सभी स्वर्गों में असंख्यात योजन विस्तार वाले विमानों की जो संख्या है उससे चौगुणे संख्यात योजन विस्तार वाले विमान हैं नव ग्रैवेयकादिक में इन्द्रक विमानों को छोड़कर श्रेणी बद्ध विमानों में संख्यात योजन विस्तार वाले और संख्यात योजन विस्तार वाले दोनों प्रकार के विमान हैं। इन्द्रक विमान संख्यात योजन विस्तार वाले ही है संख्यात योजन विस्तार वाले सब विमान मिलाकर सोलह लाख निन्यानवे हजार तीन सौ अस्सी है और असंख्यात योजन विस्तार वाले विमान सड़सठ लाख सत्तानवे हजार छह सौ उनचास कहे गये हैं। ग्रैवेयकों में उपपाद निर्ग्रन्थ लिंग के द्वारा उग्र तपश्चरण करने से ही हो सकता है अनुत्तरों में सर्वार्थ सिद्धि तक रत्नत्रयधारी तपस्वी भव्य जीव की ही उत्पति होती है। सर्वार्थ सिद्धि से बारह योजन आगे जाकर तीन लोक के मस्तक पर (सिद्ध शिला) ईषत्प्राग्भार नाम की आठवी पृथ्वी पैंतालीस लाख योजन की है। स्वर्ग लोक में ८४ लाख ९७ हजार २३ अकृत्रिम जिनालयों में जिनेन्द्र देव की जो प्रतिमायें विराजमान हैं वे समस्त जीवों के द्वारा अभिवन्दनीय हैं। जिनेन्द्र भगवन्तों की चारों ओर से अत्यधिक सुन्दरता को धारण करने वाली कषायों के अभाव से अन्तरंग अनन्त चतुष्टय व बहिरंग समवशरण लक्ष्मी की प्राप्ति की दशा को अत्यन्त शान्तता के द्वारा सूचित करने वाली समस्त अकृत्रिम प्रतिमाओं की व जिनालयों की साक्षात अर्चा पूजा वन्दना करने में असमर्थ हुआ यहाँ रहकर ही उन सबकी पूजा करता हूँ वन्दना करता हूँ नमन करता हूँ। परम पूज्य गुरुदेव श्री विशद सागर जी महाराज ने उर्ध्व लोक के जिनालयों की वन्दना में अपने उपयोग को केन्द्रित करते हुए प्रस्तुत स्वर्गलोक विधान की रचना की। पूरे मनोयोग से जो भी यह विधान पूजा करेगा उसे निश्चित ही जीवन में अपार सफलता मिलेगी सभी मनोरथ पूर्ण होगें। पुनः गुरुदेव श्री विशद सागर जी के श्री चरणों में इस महान उपकार के लिए त्रय भक्ति युत् नमोस्तु-३।

– मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

६३ इन्द्रक विमानों के विस्तार का प्रमाण निम्न प्रकार है –

क्रमांक	इन्द्रकों के नाम	विमानों का विस्तार	क्रमांक	इन्द्रकों के नाम	विमानों का विस्तार	क्रमांक	इन्द्रकों के नाम	विमानों का विस्तार
१	ऋतु	४५००००० ८/३१ यो.	२२	हारिद्र	३००९६७७ १३/३१ यो.	४३	ब्रह्महृदय	१५१९३५४ २६/३१ यो.
२	चन्द्र	४४२९०३२ १६/३१ यो.	२३	पद्म	२९३८७०९ २१/३१ यो.	४४	लान्तव	१४४८३८७ ३/३१ यो.
३	विमल	४३५८०६४ १६/३१ यो.	२४	लोहित	२८६७७४१ २९/३१ यो.	४५	शुक्र	१३७७४१९ ११/३१ यो.
४	वल्गु	४२८७०९६ २४/३१ यो.	२५	वज्र	२७९६७७४ ६/३१ यो.	४६	शतार	१३०६४५१ १९/३१ यो.
५	वीर	४२१६१२९ १/३१ यो.	२६	नन्द्या.	२७२५८०६ १४/३१ यो.	४७	आनत	१२३५४८३ २७/३१ यो.
६	अरुण	४१४५१६१ ९/३१ यो.	२७	प्रभाकर	२६५४८३८ २२/३१ यो.	४८	प्राणत	११६४५१६ ४/३१ यो.
७	नन्दन	४०७४१९३ १७/३१ यो.	२८	पृष्ठक	२५८३८७० ३०/३१ यो.	४९	पुष्पक	१०९३५४८ १२/३१ यो.
८	नलिन	४००३२२५ २५/३१ यो.	२९	गज	२५१२९०३ ७/३१ यो.	५०	शातक	१०२२५८० २०/३१ यो.
९	काञ्चन	३९३२२५८ २/३१ यो.	३०	मित्र	२४४११३५ २३/३१ यो.	५१	आरण	९५१६१२ २८/३१ यो.
१०	रोहित	३८६१२९० १०/३१ यो.	३१	प्रभा	२३७०९६७ २३/३१ यो.	५२	अच्युत	८८०६४५ ५/३१ यो.
११	चञ्च	३७९०३२२ १८/३१ यो.	३२	अञ्जन	२३००००० यो.	५३	सुदर्शन	८०९६७७ १३/३१ यो.
१२	मरुत्	३७१९३५४ २६/३१ यो.	३३	वनमाल	२२२९०३२ ८/३१ यो.	५४	अमोघ	९३८७०९ २१/३१ यो.
१३	ऋद्धीश	३६४८३८७ ३/३१ यो.	३४	नाग	२१५८०६४ १३/३१ यो.	५५	सुप्रबुद्ध	६६७७४१ २९/३१ यो.
१४	वैडूर्य	३५७७४१९ ११/३१ यो.	३५	गरुड़	२०८७०९६ २४/३१ यो.	५६	यशोधर	५९६७७४ ६/३१ यो.
१५	रुचक	३५०६४५१ १९/३१ यो.	३६	लाङ्गल	२०१६१२९ १/३१ यो.	५७	सुभद्र	५२५८०६ १४/३१ यो.
१६	रुचिर	३४३५४८३ २७/३१ यो.	३७	बलभद्र	१९४५१६१ १/३१ यो.	५८	सुविशाल	४५४८३८ २२/३१ यो.

क्रमांक	इन्द्रकों के नाम	विमानों का विस्तार	क्रमांक	इन्द्रकों के नाम	विमानों का विस्तार	क्रमांक	इन्द्रकों के नाम	विमानों का विस्तार
१७	अंक	३३६४५१६ ४/३१ यो.	३८	चक्र	१८७४१९३ १७/३१ यो.	५९	सुमनस्	३८३८७० ३०/३१ यो.
१८	स्फटिक	३२९३५४८ १२/३१ यो.	३९	अरिष्ट	१८०३२२५ २५/३१ यो.	६०	सौमनस्	३१२९०३ ७/३१ यो.
१९	तपनीय	३२२२५८० १९/३१ यो.	४०	सुरस	१७३२२५८ २/३१ यो.	६१	प्रीतिंकर	२४१९३५ १५/३१ यो.
२०	मेघ	३१५१६१२ २८/३१ यो.	४१	ब्रह्म	१६६१२९० १०/३१ यो.	६२	आदित्य	१७०९६७ २३/३१ यो.
२१	अभ्र	३०८०६४५ ५/३१ यो.	४२	ब्रह्मोत्तर	१५९०३२२ १८/३१ यो.	६३	स्वार्थ सिद्धि	१००००० यो.

क्रमांक	स्वर्गों के नाम	विमानों की संख्या	इन्द्रक सं.	श्रेणीबद्धों की सं.	प्रकीर्णकों की सं.
१	सौधर्म	३२०००००-	३१ +	४३७१ =	३१९५५९७
२	ऐशान	२८०००००-	० +	१४५७ =	२७९८५४३
३	सानत्कुमार	१२०००००-	७ +	५८८ =	११९९४०५
४	माहेन्द्र	८०००००-	० +	१९६ =	७९८०४
५	ब्रह्म	२९६०००-	४ +	२७० =	२९५७२६
६	ब्रह्मोत्तर	१०४०००-	० +	९० =	१०३९१०
७	लान्तव	२५०४२-	२ +	११७ =	२४९२३
८	कापिष्ठ	२४९५८-	० +	३९ =	२४९१९
९	शुक्र	२००२०-	१ +	५४ =	१९९६५
१०	महाशुक्र	१९९८०-	० +	१८ =	१९९६२
११	शतार	३०१९-	१ +	५१ =	२९६६
१२	सहस्त्रार	२९८१ -	० +	१७ =	२९६५
१३	आनत प्राणत	४४० -	३ +	१८० =	२५७
१४	आरण अच्युत	२६० -	३ +	१४४ =	११३
१५	अधोग्रैवेयक	१११ -	३ +	१०८ =	०
१६	मध्यम ग्रैवेयक	१०७ -	३ +	७२ =	३२
१७	उपरिम ग्रैवयक	९१ -	३ +	३६ =	५२
१८	अनुदिश	९ -	१ +	४ =	४
१९	अनुत्तर	५ -	१ +	४ =	०

स्वर्ग लोक जिनालय पूजन

स्थापना

अकृत्रिम स्वर्गों में पावन, इन्द्रक पंक्ती बद्ध विमान।
और प्रकीर्णक रहे अलौकिक, जिनमें जिनगृह हैं भगवान।।
व्रत विमान पंक्ती कर प्राणी, करते हैं प्रभु का गुणगान।
पुण्य प्राप्त करके अनुक्रम से, पाते हैं जो पद निर्वाण।।

दोहा - स्वर्ग विमानों में रहे, श्री जिनेन्द्र के धाम।
आह्वानन् करते हृदय, करके विशद प्रणाम्

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ग लोके विमान पंक्ति व्रताराध्य श्री जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट सन्निधिकरणं।

(टप्पा चाल)

जन्म जरादिक रोग नाश हों, हे जिनवर स्वामी!
निर्मल जल से अर्चा करते, हे अन्तर्यामी!।।
स्वर्ग विमानों में श्री जिनगृह, प्रतिमाएँ भाई
वीतरागता की दर्शायक, पूजें अतिशायी।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ग लोके विमान पंक्ति व्रताराध्य जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन चढ़ा रहे यह पावन, भवाताप नाशी।
कर्म नाशकर के बन जाएँ, शिवपुर के वासी।।
स्वर्ग विमानों में श्री जिनगृह, प्रतिमाएँ भाई।
वीतरागता की दर्शायक, पूजें अतिशायी।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ग लोके विमान पंक्ति व्रताराध्य जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय पद पाने को अक्षत, चढ़ा रहे स्वामी।
यही भावना विशद हमारी, बनें मोक्ष गामी।।
स्वर्ग विमानों में श्री जिनगृह, प्रतिमाएँ भाई।
वीतरागता की दर्शायक, पूजें अतिशायी।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ग लोके विमान पंक्ति व्रताराध्य जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्प मनोहर लेकर, अर्चा को आए।
काम रोग जो लगा अनादी, मेरा नश जाए।।
स्वर्ग विमानों में श्री जिनगृह, प्रतिमाएँ भाई।
वीतरागता की दर्शायक, पूजें अतिशायी।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ग लोके विमान पंक्ति व्रताराध्य जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य बनाए, क्षुधा रोग नाशी।
जिन गुण की अर्चा करते हैं, होके विश्वासी।।
स्वर्ग विमानों में श्री जिनगृह, प्रतिमाएँ भाई।
वीतरागता की दर्शायक, पूजें अतिशायी।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ग लोके विमान पंक्ति व्रताराध्य जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का हम यह दीप जलाते, मोह तिमिर नाशी।
मोह नाशकर के पद पाएँ, अविचल अविनाशी।।
स्वर्ग विमानों में श्री जिनगृह, प्रतिमाएँ भाई।
वीतरागता की दर्शायक, पूजें अतिशायी।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ग लोके विमान पंक्ति व्रताराध्य जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्म अनादी हमें सताते, कैसे नाश करें।
यही भावना भाते हैं हम, ज्ञान प्रकाश करें।।

स्वर्ग विमानों में श्री जिनगृह, प्रतिमाएँ भाई।
वीतरागता की दर्शायक, पूजें अतिशायी।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ग लोक विमान पंक्ति व्रताराध्य जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

पुण्य के फल की आशा में हम, भटक रहे स्वामी।।
मोक्ष महाफल को पाकर के, बनें मोक्ष गामी।।
स्वर्ग विमानों में श्री जिनगृह, प्रतिमाएँ भाई।
वीतरागता की दर्शायक, पूजें अतिशायी।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ग लोके विमान पंक्ति व्रताराध्य जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

भव भोगों की आशा लेकर, जग में भटकाए।
पद अनर्घ्य पाने को हम यह, विशद अर्घ्य लाए।।
स्वर्ग विमानों में श्री जिनगृह, प्रतिमाएँ भाई।
वीतरागता की दर्शायक, पूजें अतिशायी।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ग लोके विमान पंक्ति व्रताराध्य जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्व. स्वाहा।

दोहा – शान्ती की है कामना, है शान्ती की चाह।
अक्षय शांती में विशद, करना अब अवगाह।।
(शान्तये शान्तिधारा)

दोहा – पुष्पांजलि करके मिले, हमको शिव सोपान।
संयम के पथ पर बढ़ें, करने को कल्याण।।
(दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

जयमाला

दोहा- स्वर्ग विमानों में रहे, शाश्वत श्री जिनधाम।
जयमाला गाते यहाँ, कर जिन चरण प्रणाम ।।

(चौपाई)

गगन अनन्तानन्त कहा है, जिसमें हैं त्रैलोक महान।
अधो मध्य अरु ऊर्ध्व लोक हैं, छह द्रव्यों संयुक्त प्रधान।।
सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक में श्री जिन धाम।
चार सौ अट्ठावन श्री जिनगृह, मध्यलोक में हैं अभिराम।।१।।

ऊर्ध्व लोक के जिनगृह पावन, जिनका हम करते गुणगान।
जिसमें इन्द्रक श्रेणीबद्ध शुभ, और प्रकीर्णक रहे विमान।।
हैं सौधर्म युगल में इकतिस, सनतकुमार युगल के सात।
ब्रह्म युगल में चार बताए, लान्तव युगल के दो विख्यात।।२।।

महाशुक्र सहस्रार युगल में, एक-एक ही रहे विमान।
आनतादि में पाँच रहे शुभ, अतिशयकारी आभावान।।
नौ विमान ग्रैवेयक के हैं, शाश्वत अकृत्रिम मनहार।
अनुदिश और अनुत्तर में शुभ, इन्द्रक एक एक शुभकार।।३।।

श्रेणीबद्ध विमान स्वर्ग के, और प्रकीर्णक रहे विमान।
हैं संख्यात अकृत्रिम शाश्वत, स्वर्ण रत्नमय महिमावान।।
नव ग्रैवेयक नव अनुदिश में, पंच अनुत्तर रहे महान।
निर्ग्रन्थों का गमन वहाँ है, ऐसा कहते जिन भगवान।।४।।

अनुदिश और अनुत्तर में सब, जाते हैं सम्यक्त्वी जीव।
अन्तिम दो भव पाते हैं जो, पाने वाले पुण्य अतीव।।
ऐसे जिनगृह जिनबिम्बों में, बना रहे मेरा श्रद्धान।
रत्नत्रय को पालन करके, प्राप्त करें हम पद निर्वाण।।५।।

दोहा - स्वर्गों के इन्द्रक तथा, पंक्तीबद्ध विमान।
जिनगृह जिन हम पूजते, उनके महति महान।।

ॐ ह्रीं अर्हं विमान पंक्ति व्रताराध्य ऊर्ध्वलोक जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - जिनबिम्बों की लोक में, महिमा रही विशाल।
भावसहित जिनका विशद, वन्दन करें त्रिकाल।।

।। इत्याशीर्वाद।।

"अर्घ्यावली"

स्वर्गलोक के विमानों में स्थित जिनालय जिनबिम्बों के अर्घ्य

दोहा – स्वर्ग विमानों में रहे, जिनगृह महिमावान।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, करके उनका ध्यान।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल छन्द)

सौधर्म स्वर्ग में जानो, इन्द्रक विमान "ऋतु" मानो।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋतु इंद्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ "विमल" विमान बताया, अतिशयकारी शुभ गाया।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हं विमल इंद्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ "चन्द्र" विमान कहाए, महिमा शाली कहलाए।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं चन्द्र इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"वल्गू" विमान शुभकारी, इन्द्रक जानो मनहारी।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।४।।

ॐ ह्रीं अर्हं वल्गू इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री "वीर" विमान निराला, जो अनुपम आभा वाला।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।५।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीर इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ "अरुण" विमान कहाए, अतिशय आभा फैलाए।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरूण इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

"नन्दन" विमान मनहारी, जिसकी महिमा है न्यारी।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।७।।

ॐ ह्रीं अर्हं नन्दन इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

शुभ "नलिन" विमान बताया,जग जन के मन को भाया।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।८।।

ॐ ह्रीं अर्हं नलिन इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

"काञ्चन" विमान अतिशायी, आभा जिसकी सुखदायी।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।९।।

ॐ ह्रीं अर्हं कंचन इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

इन्द्रक "रोहित" कहलाए, अपनी कांती फैलाए।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।१०।।

ॐ ह्रीं अर्हं रोहित इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

"चञ्चल" विमान शुभ गाया, विस्मय कारी बतलाया।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।११।।

ॐ ह्रीं अर्हं चञ्चल इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

है "मरुत" विमान निराला, जो मन को हर्षाने वाला।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।१२।।

ॐ ह्रीं अर्हं मरुत इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

इन्द्रक "ऋद्धीश" कहाए, जो ऋद्धि सिद्धि दिलवाए।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।१३।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋद्धीश इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

"वैडूर्य" सु इन्द्रक भाई, स्वर्गों में है अतिशायी।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।१४।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैडूर्य इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

शुभ "रुचक" विमान भी जानो, अतिशयकारी पहचानो।
उसमें जिन गृह प्रतिमाएँ, हम भाव से पूज रचाएँ।।१५।।

ॐ ह्रीं अर्हं रुचक इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

चौपाई छन्द

"रुचिर" विमान रहा शुभकारी, स्वर्ग में इन्द्रक महिमाकारी।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।१६।।

ॐ ह्रीं अर्हं रुचिर इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"अंक" विमान स्वर्ग में भाई, शोभित होवे मंगलदायी।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हं अंक इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ विमान "स्फटिक" बताया, जिसकी सोहे उत्तम छाया।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।१८।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्फटिक इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"तपनीय" इन्द्रक है मनहारी, जिसकी महिमा मंगलकारी।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।१९।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपनीय इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक "मेघ" श्रेष्ठ शुभ जानो, मेघ समान सघन पहचानो।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं मेघ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक "अभ्र" विमान कहाए, धवल कांतिमय शोभा पाए।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभ्र इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है "हारिद्र" इन्द्रक शुभकारी, शोभा जिसकी विस्मयकारी।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं हारिद्र इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्वर्ग में इन्द्रक "पद्म" गाया, शिखर ध्वजा संयुक्त बताया।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्म इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक "लोहित" अतिशयकारी, स्वर्ग में सोहे मंगलकारी।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोहित इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक "वज्र" विमान कहाए, स्वर्ग में जो महिमा दिखलाए।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्र इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"नंद्या" विमान निराला, जन-जन का मन हरने वाला।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं नंद्या इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक रहा "प्रभंकर" भाई, जिसकी महिमा है अतिशायी।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभंकर इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री "पृष्ठक" इन्द्रक शुभ जानो,जिसकी महिमा अतिशय मानो।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं पृष्ठक इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"गज" इन्द्रक है महिमाशाली, जहाँ रहे हरदम खुशहाली।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं गज इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक "मित्र" स्वर्ग में सोहे, भविजीवों के मन को मोहे।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं मित्र इंद्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री "प्रभ" इन्द्रक है शुभकारी, जिन प्रतिमाएँ हैं मनहारी।
उसमें जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित श्री जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितीय युगल

सानतकुमार माहेन्द्र स्वर्ग

(मोतियादाम छन्द)

स्वर्ग तृतिय में इन्द्र विमान, बताया "अंजन" जिसका नाम।
रहे उसमें जो श्री जिनधाम, करें हम जिनपद विशद प्रणाम।।३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अंजन इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बताया इन्द्रक श्री "वनमाल", रहा जो शाश्वत श्रेष्ठ त्रिकाल।
रहे उसमें जो श्री जिनधाम, करें हम जिनपद विशद प्रणाम।।३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं वनमाल इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहा तृतिय इन्द्रक श्री "नाग", भव्य जन का जिन से अनुराग।
रहे उसमें जो श्री जिनधाम, करें हम जिनपद विशद प्रणाम।।३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं नाग इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहा इन्द्रक श्री "गरुड़" विमान, कहा इस जग में श्रेष्ठ महान।
रहे उसमें जो श्री जिनधाम, करें हम जिनपद विशद प्रणाम।।३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं गरुड़ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री "लांगल" है श्रेष्ठ विमान, शोभता है जो आभावान।
रहे उसमें जो श्री जिनधाम, करें हम जिनपद विशद प्रणाम।।३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं लांगल इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्वर्ग में इन्द्रक है "बलभद्र", जीव सब करते जिसकी कद्र।
रहे उसमें जो श्री जिनधाम, करें हम जिनपद विशद प्रणाम।।३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं बलभद्र इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहा इन्द्रक श्री "चक्र" महान, बताई जिसकी अनुपम शान।
रहे उसमें जो श्री जिनधाम, करें हम जिनपद विशद प्रणाम।।३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं चक्र इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ब्रह्मयुगल विमान स्थित जिनालय जिनबिम्बों के अर्घ्य

(रोला छन्द)

इन्द्रक "अरिष्ट" ब्रह्म स्वर्ग में सु जानिए,
देवों का वास जिसमें गाया है मानिए।
जिनगेह रहे जिसमें जिनबिम्ब भी अरे!,
हम पूजते परोक्ष विशद भाव से भरे।।३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरिष्ट इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक विमान "सुरस" नाम का अहा,
शाश्वत है ब्रम्ह स्वर्ग में जो रत्नमय रहा।
जिनगेह रहे जिसमें जिनबिम्ब भी अरे!,
हम पूजते परोक्ष विशद भाव से भरे।।४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरस इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक विमान "ब्रह्म अतिशय" श्रेष्ठ मानिए,
महिमा अपार जिसकी आगम से जानिए।
जिनगेह रहे जिसमें जिनबिम्ब भी अरे!,
हम पूजते परोक्ष विशद भाव से भरे।।४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक विमान "ब्रह्मोत्तर" नाम का रहा,
वैभव विशेष जिसका जिनदेव ने कहा।।
जिनगेह रहे जिसमें जिनबिम्ब भी अरे!,
हम पूजते परोक्ष विशद भाव से भरे।।४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मोत्तर इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

लांतव युगल के विमानों में स्थित जिनालयों के अर्घ्य

(ज्ञानोदय छन्द)

''ब्रह्म हृदय" इन्द्रक विमान के, जिनगृह जिन को ध्याऐंगे।
वीतराग मुद्रा है पावन, पूजा पाठ रचाऐंगे।।४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म हृदय इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"लांतव" इन्द्रक प्रभ मध्यम शुभ, की महिमा बतलाऐंगे।
शाश्वत जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, भक्तिभाव से ध्यायेंगे।।४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं लांतव इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

महाशुक्र युगल के जिनालय में स्थित जिनबिम्बो के अर्घ्य

"शुक्र" इन्द्रक विमान है, जाकर के हर्षाऐंगे।
शाश्वत जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, भक्तिभाव से ध्यायेंगे।।४५।।
ॐ ह्रीं अर्हं शुक्र इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"शताख्य" इन्द्रक प्रभ मध्यम, आवर्त स्वर्ग में रहा विशिष्ट।
भव्य जीव जिन मंदिर पूजें, श्री जिनबिम्ब मानते इष्ट।।४६।।
ॐ ह्रीं अर्हं शताख्य इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

आनत युगल विमान स्थित जिनालयों के अर्घ्य

आनतादि युगलों में ''आनत'', प्रभ मध्यम आवर्त विशिष्ट।
भव्य जीव जिन मंदिर पूजें, श्री जिनबिम्ब मानते इष्ट।।४७।।
ॐ ह्रीं अर्हं आनत इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्राणतादि युगलों में "प्राणत", प्रभ मध्यम आवर्त विशिष्ट।
भव्य जीव जिन मंदिर पूजें, श्री जिनबिम्ब मानते इष्ट।।४८।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्राणत इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक रहा विमान सु "पुष्पक",स्वर्ग लोक में महति महान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान।।४९।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पक इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक रहा विमान "सानुकर", अतिशयकारी आभावान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान।।५०।।
ॐ ह्रीं अर्हं सानुकर इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"आरण" इन्द्र विमान रहा शुभ, जिसमें गाए श्री जिनधाम।
श्री जिन बिम्ब अकृत्रिम जिसमें, जिनके चरणों विशद प्रणाम।।५१।।
ॐ ह्रीं अर्हं आरण इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"अच्युत" इन्द्रक है विमान शुभ, जिसकी महिमा रही महान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान।।५२।।
ॐ ह्रीं अर्हं अच्युत इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नव ग्रैवेयक

अधो ग्रैवेयक में इन्द्रक है, श्री "सुदर्शन" रहा विमान।
उनमें श्री जिनबिम्ब जिनालय, का हम करते हैं गुणगान॥५३॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शन इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री "अमोघ" ग्रैवेयक इन्द्रक, है विमान अति आभावान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान॥५४॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमोघ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"सुप्रबुद्ध" इन्द्रक विमान है, अधो ग्रैवेयक अतिशयवान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान॥५५॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रबुद्ध इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम ग्रैवेयक

मध्यम ग्रैवेयक में विमान है, रहा "यशोधर" जिसका नाम।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान॥५६॥

ॐ ह्रीं अर्हं यशोधर इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक रहा "सुभद्र" ग्रैवेयक, भव्य पूजते श्रद्धावान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान॥५७॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुभद्र इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"सुविशाल" इन्द्रक है अनुपम, भव्य जीव करते गुणगान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान॥५८॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुविशाल इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उपरिम ग्रैवेयक

"सुमनश" इन्द्रक उपरिम ग्रीवक, में गाया है महिमावान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान।।५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुमनश इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इन्द्रक रहा "सौमनश" पावन, अतिशयकर जिन बिम्बोंवान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान।।६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौमनश इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"प्रीतिंकर" इन्द्रक विमान है, चमक रहा जो स्वर्ण समान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान।।६१।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रीतिंकर इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनुदिश विमान

इन्द्रक है "आदित्य" मनोहर, अनुदिश में जो रहा महान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान।।६२।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदित्य इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनुत्तर विमान

इन्द्रक है "सर्वार्थ सिद्धि" शुभ, रहे अनुत्तर पंच महान।
उसमें जिनगृह जिनबिम्बों का, करते भाव सहित गुणगान।।६३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वार्थ सिद्धि इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणीबद्ध विमान स्थित जिनालय पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

हैं "सौधर्म" स्वर्ग में पावन, श्रेणी बद्ध विमान।
चार हजार तीन सौ इकहत्तर, अन्य प्रकीर्णक मान।।६४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्गे 4771 श्रेणीबद्ध 31 लाख 95 हजार 598 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध "ईशान" स्वर्ग में, चौदह सौ सत्तावन।
है विमान संख्याती योजन, जिनके रहे भवन।।६५।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईशान स्वर्गे 1457 श्रेणीबद्ध 27 लाख 98 हजार 543 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"सानत कुमार" स्वर्ग में पावन, पाँच सौ अठासी जान।
श्रेणी बद्ध विमानों में शुभ, जिनगृह रहे महान।।६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सानतकुमार स्वर्गे 588 श्रेणीबद्ध 11 लाख 99 हजार 405 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध "महेन्द्र" स्वर्ग में, पावन रहे विमान।
एक सौ छियानवे अन्य प्रकीर्णक, में जिनगृह शुभ मान।।६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं माहेन्द्र स्वर्गे 196 श्रेणीबद्ध 7999 हजार 804 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान स्वर्ग के, "ब्रह्म युगल में जान।
अकृत्रिम शाश्वत जिनगृह के, तीन सौ साठ विमान।।६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म स्वर्गे 360 श्रेणीबद्ध 3 लाख 99 हजार 636 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"लान्तव'' युगल स्वर्ग में पावन, श्रेणी बद्ध विमान।
एक सौ छप्पन रहे अकृत्रिम, जिनमें जिन भगवान।।६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं लांतव स्वर्गे 156 श्रेणीबद्ध 49 हजार 842 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"शुक्र'' युगल में रहे बहत्तर, श्रेणी बद्ध विमान।
अन्य प्रकीर्णक में भी जिनगृह, में सोहें भगवान।।७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुक्र स्वर्गे 72 श्रेणीबद्ध 39 हजार 927 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"युगल'' शतार में सढ़सठ गाए, श्रेणी बद्ध विमान।
अन्य प्रकीर्णक में भी जिनगृह, में सोहें भगवान।।७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं शतार स्वर्गे 68 श्रेणीबद्ध 5 हजार 931 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीन सौ चौबिस "आनतादि" में, श्रेणी बद्ध विमान।
चार स्वर्ग में अन्य प्रकीर्णक, में सोहें भगवान।।७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं आनतादि चतुः स्वर्गे 324 श्रेणीबद्ध 370 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"अधो ग्रैवेयक" त्रय में गाए, श्रेणी बद्ध विमान विशेष।
एक सौ आठ जिनालय पावन, शाश्वत में है पूज्य जिनेश।।७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधोग्रैवेयक 108 श्रेणिबद्ध विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

''मध्ययम ग्रैवेयक'' त्रय में पावन, श्रेणीबद्ध विमान।
रहे बहत्तर शाश्वत जिनगृह, में सोहे भगवान।।७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं मध्ययम ग्रेवेयक 72 श्रेणीबद्ध 32 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"उपरिम ग्रीवक" में शाश्वत हैं, श्रेणी बद्ध विमान।
छत्तिस प्रकीर्णक बावन है, जो हैं पूज्य महान।।७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं उपरिम ग्रेवेयक 36 श्रेणीबद्ध 52 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध चार "अनुदिश" में, शाश्वत रहे विमान।
उनके जिनगृह श्री जिन का हम, करते हैं गुणगान।।७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनुदिश विमाने 4 श्रेणीबद्ध 4 प्रकीर्णक विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"पञ्च अनुत्तर" में विमान चउ, श्रेणी बद्ध महान।
उनके जिनगृह श्री जिन का हम, करते हैं गुणगान।।७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं पञ्च अनुत्तर विमाने 4 श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय जिनबिंबेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम ऋतु इन्द्रक पूर्वादिक प्रतिदिशे 61 श्रेणी बद्ध विमान स्थित जिनालयों के अर्घ्य

(ज्ञानोदय छन्द)

प्रथम स्वर्गऋतु इन्द्रक में शुभ, "संस्थित प्रभ" आवर्त विशिष्ट।
मध्यम श्रेणी बद्ध विमानों, में जिनगृह प्रतिमाएँ इष्ट।
जिनकी अर्चा करने वालों, के क्षय होते सारे कष्ट।
अनुकृम से शिव पदवी पाते, सर्व कर्म करके जो नष्ट।।७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक संस्थित प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग में श्री "वत्सप्रभ" चउ, मध्यमआवर्त रहे विशिष्ट।
श्रेणी बद्धविमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य हैं इष्ट।।७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री वत्सप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग में श्री "वृत्त प्रभ" शुभ मध्यम आवर्त रहे विशिष्ट।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य हैं इष्ट।।८०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री वृत प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग में चार "कुसुम प्रभ", मध्यम आवर्त रहे विशिष्ट।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य हैं इष्ट।।८१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री कुसुमप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री सौधर्म स्वर्ग में आवर्त्त, मध्यम विशिष्ट "चापप्रभ" चार।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिन पूज्य हैं मंगलकार।।८२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री चापप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चार "छत्र प्रभ" स्वर्ग प्रथम में, आवर्त मध्यम अतिशयकार।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिन पूज्य हैं मंगलकार।।८३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री छत्रप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग में "अंजन प्रभ" चउ, मध्यम आवर्त रहे विशिष्ट।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य हैं इष्ट।।८४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री अंजनप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चार "कलश प्रभ" स्वर्ग प्रथम में, आवर्त मध्यम अतिशयकार
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में वन्दन है बारम्बार।।८५।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री कलशप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहे "वृषभ प्रभ" स्वर्ग प्रथम में, मध्यम आवर्त मंगलकार।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में वन्दन है बारम्बार।।८६।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री वृषभप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग में "सिंह प्रभादिक", चउ मध्यम आवर्त विशिष्ट
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य है इष्ट।।८७।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री सिंहप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग में "सुरप्रभ" आदिक, चउ मध्यम आवर्त विशिष्ट।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य हैं इष्ट।।८८।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री सुरप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहे "छत्र प्रभ" स्वर्गप्रथम में, मध्यम आवर्त मंगलकार।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में वन्दन है बारम्बार।।८९।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री छत्रप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"अंजन प्रभ" आदिक बतलाए, मध्यम आवर्त मंगलकार।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में वन्दन है बारम्बार।।९०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री अंजनप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग में चार "असुर प्रभ", है मध्यम आवर्त विशिष्ट।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य है इष्ट ।।९१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री असुरप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ॐ रहे "मनोहर प्रभ" स्वर्गों में, चउ मध्यम आवर्त विशिष्ट।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य है इष्ट।।९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री मनोहरप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग में चार "भद्रप्रभ", है मध्यम आवर्त विशिष्ट।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य है इष्ट।।९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री भद्रप्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहे "सर्वतोभद्र" सुप्रभ चउ, है मध्यम आवर्त विशिष्ट।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य है इष्ट।।९४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री सर्वतोभद्र प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दिक् "स्वस्तिक प्रभ" रहे स्वर्ग में, शुभमध्यम आवर्त विशिष्ट।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य है इष्ट।।९५।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री स्वस्तिक प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग में "अंदिश प्रभ" शुभ, है मध्यम आवर्त विशिष्ट।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में जिनबिम्ब पूज्य है इष्ट।।९६।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री अंदिश प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"दिगु प्रभ" आवर्त मध्यम विशिष्ट है, स्वर्ग प्रथम में अपरम्पार।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में वन्दन है बारम्बार।।९७।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री दिगु प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"वर्धमान प्रभ" आवर्त हैं मध्यम, श्रेणी बद्ध विमान विशिष्ट।
भाव सहित हम पूज रहे है, जिनगृह में श्री जिन है इष्ट।।९८।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री वर्धमान प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"माहेन्द्र प्रभ" आवर्त है मध्यम, प्रथम स्वर्ग में अपरम्पार।
श्रेणी बद्ध विमान जिनालय, में वन्दन है बारम्बार।।९९।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री माहेन्द्र प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"अमरेन्द्र प्रभ" आवर्त है मध्यम, श्रेणी बद्ध विमान विशिष्ट।
भाव सहित हम पूज रहे है, जिनगृह में श्री जिन है इष्ट।।१००।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री अमरेन्द्र प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"माहेन्द्र प्रभ" आवर्त है मध्यम, श्रेणी बद्ध विमान विशिष्ट।
भाव सहित हम पूज रहे है, जिनगृह में श्री जिन है इष्ट।।१०१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री माहेन्द्र प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट "उपार्द्ध प्रभ" आवर्त, श्रेणी बद्ध विमान विशिष्ट।
भाव सहित हम पूज रहे है, जिनगृह में श्री जिन है इष्ट।।१०२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री उपार्द्ध प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध "कमल प्रभ" मध्यम, आवर्त विशिष्ट शुभ रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।१०३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री कमल प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध "को कनद" मध्यम, आवर्त विशिष्ट शुभ रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।१०४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री कोकनद प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध "चक्र प्रभ" मध्यम, आवर्त इन्द्रक रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।१०५।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री चक्र प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध "उत्पल प्रभ" मध्यम, आवर्त इन्द्रक रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।१०६।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री उत्पल प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान "कुमुद प्रभ" आवर्त मध्यम इन्द्रक जान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।१०७।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक कुमुद प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"पुण्डरीक प्रभ" आवर्त मध्यम, श्रेणी बद्ध शुभ रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।१०८।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री पुण्डरीक प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट "सोमक प्रभ" आवर्त, श्रेणी बद्ध शुभ रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।१०९।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री सोमक प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध "तिमिश्र प्रभ" आवर्त, मध्यम विशिष्ट शुभ रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।११०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री तिमिश्र प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट "अंक प्रभ" आवर्त, श्रेणी बद्ध शुभ रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।१११।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री अंक प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध "स्वरान्त प्रभ" मध्यम, आवर्त इन्द्रक रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।११२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री स्वरान्त प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट "पाप प्रभ" आवर्त, श्रेणी बद्ध शुभ रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।११३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री पाप प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध "गगन प्रभ" मध्यम, आवर्त इन्द्रक रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।११४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री गगन प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट "सूर्य प्रभ" आवर्त, इन्द्रक श्रेणी बद्ध विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।११५।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री सूर्य प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"कंचम प्रभ" आवर्त सुमध्यम, विशिष्ट श्रेणी बद्ध रहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।११६।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री कंचम प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध "नक्षत्र प्रभ" मध्यम, आवर्त विशिष्ट शुभरहा विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।११७।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री नक्षत्र प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"चन्दन प्रभ" आवर्त सुमध्यम, श्रेणी बद्ध विशिष्ट विमान।
प्रथम स्वर्ग के पूज रहे हम, जिनगृह में जो है भगवान।।११८।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री चन्दन प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट "अमल प्रभ" आवर्त, श्रेणी बद्ध विमान।
जिनगृह में जिन प्रतिमाओं का, करते हम गुणगान ।।११९।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री अमल प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट "विमल प्रभ" आवर्त, श्रेणी बद्ध विमान।
जिनगृह में जिन प्रतिमाओं का, करते हम गुणगान।।१२०।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री विमल प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट "नन्दन प्रभ" आवर्त, श्रेणी बद्ध विमान ।।
जिनगृह में जिन प्रतिमाओं का, करते हम गुणगान।।१२१।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री नन्दन प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट "सौमनस प्रभ" आवर्त, श्रेणी बद्ध विमान ।।
जिनगृह में जिन प्रतिमाओं का, करते हम गुणगान।।१२२।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री सौमनस प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट "उदित प्रभ" आवर्त, श्रेणी बद्ध विमान।।
जिनगृह में जिन प्रतिमाओं का, करते हम गुणगान।।१२३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री उदित प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट "समुदित प्रभ" आवर्त, श्रेणी बद्ध विमान ।।
जिनगृह में जिन प्रतिमाओं का, करते हम गुणगान।।१२४।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतु इन्द्रक श्री समुदित प्रभ आवर्त मध्ययम विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"दोहा"

मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ, श्रेणी बद्ध विमान।
रहा "धर्म वर" प्रभ विशद, इन्द्रक महति महान।।१२५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले धर्म वर प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ, श्रेणी बद्ध विमान।
रहा "वैश्रवण" प्रभ विशद, इन्द्रक महति महान।।१२६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले वैश्रवण प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
रहा "कर्ण" प्रभ भी विशद, श्रेणी बद्ध महान।।१२७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले कर्ण प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
रहा "कनकप्रभ" भी विशद, श्रेणी बद्ध विमान।।१२८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले कनकप्रभ प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
"तथा भूत" प्रभ भी रहा, श्रेणी बद्ध विमान।।१२९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले तथा भूत प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
"लोककांत" प्रभ भी विशद, श्रेणी बद्ध विमान।।१३०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले लोककांत प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
विशद "सस्य" प्रभ भी रहा, श्रेणी बद्ध विमान।।१३१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले सस्य प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
रहा "अमोघस्पर्श" प्रभ, श्रेणी बद्ध विमान।।१३२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले अमोघस्पर्श प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
विशद रहा "जलकांत" प्रभ, श्रेणी बद्ध विमान।१३३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले जलकांत प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
रहा "रोहितक" प्रभ विशद, श्रेणी बद्ध विमान।।१३४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले रोहितक प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
"अमितभास" प्रभ भी रहा, श्रेणी बद्ध विमान।।१३५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले अमितभास प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
है "सिद्धान्त" प्रभ भी विशद, श्रेणी बद्ध विमान।।१३६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले सिद्धान्त प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
"कुंडल" प्रभ गाया परम, श्रेणी बद्ध विमान।।१३७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले कुंडल प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
विशद "सौम्य" प्रभ भी रहा, श्रेणी बद्ध विमान।।१३८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले सौम्य प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त है, इन्द्रक श्रेष्ठ विमान।
है "अभयेन्द्र" प्रभ भी विशद, श्रेणी बद्ध विमान।।१३९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले अभयेन्द्र प्रभ इन्द्रक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नोट : तिलोयपण्णत्ति में वत्तिवृषभस्वामी ने कहा है प्रथमादि सोलह स्वर्ग के इंद्रक विमानों के नामों में प्रभ आवर्त्त मध्यम विशिष्ट लगाने से श्रेणीबद्ध विमानों के नाम बनते हैं। उन श्रेणीबद्ध विमानों के जिनालय के अर्घ्य।

श्रेणीबद्ध विमान

(नरेन्द्र छन्दः)

प्रथम स्वर्ग "ऋतु" प्रभ विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
है मध्यम आवर्त मनोहर, जिनगृह पूज्य महान।।१४०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले ऋतुप्रभ मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट आवर्त मनोहर, श्रेणी बद्ध विमान।
प्रथम स्वर्ग में रहा "विमल प्रभ" जिनगृह पूज्य महान।।१४१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले विमल प्रभ आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग मध्यम विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
है आवर्त "चन्द्रप्रभ" जिसमें, जिनगृह पूज्य महान।।१४२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले चन्द्रप्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग मध्यम विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
"वल्गुप्रभ" आवर्त है जिसमें, जिनगृह पूज्य महान।।१४३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले वल्गुप्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग मध्यम विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
है आवर्त "वीर" प्रभ जिसमें, जिनगृह पूज्य महान।।१४४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले वीर प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग मध्यम विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
प्रथम स्वर्ग में रहा "अरुण" प्रभ, जिनगृह पूज्य महान।।१४५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले अरुण प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग मध्यम विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
"नन्दन" प्रभ आवर्त है जिसमें, जिनगृह पूज्य महान।।१४६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले नन्दन प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग मध्यम विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
है आवर्त "नलिन" प्रभ जिसमें, जिनगृह पूज्य महान।।१४७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले नलिन प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग मध्यम विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
"कंचन" प्रभ आवर्त है जिसमें, जिनगृह पूज्य महान।।१४८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले कंचन प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग मध्यम विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
"रोहित" प्रभ आवर्त है जिसमें, जिनगृह पूज्य महान।।१४९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले रोहित प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग मध्यम विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
है आवर्त "मरूत" प्रभ जिसमें, जिनगृह पूज्य महान।।१५०।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले मरूत प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग मध्यम विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
शुभ आवर्त "ऋद्धीश" प्रभ जिसमें, जिनगृह पूज्य महान।।१५१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले ऋद्धीश प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रथम स्वर्ग मध्यम विशिष्ट है, श्रेणी बद्ध विमान।
"वैडूर्य" प्रभ आवर्त है जिसमें, जिनगृह पूज्य महान।।१५२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले वैडूर्य प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"सोरठा"

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, श्री "रुचक प्रभ" जो रहा।।१५३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले रुचक प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, रहा "रुचिर प्रभ" भी विशद।।१५४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले रुचिर प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान विशद "अंक" प्रभ भी रहा।।१५५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले अंक प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ
इन्द्रक महति महान, रहा श्री "चंच" प्रभ विशद।।१५६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले चंच प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ
इन्द्रक महति महान, विशद "स्फटिक" प्रभ रहा ।।१५७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले स्फटिक प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ
इन्द्रक महति महान, श्री "तपनीय" प्रभ भी रहा ।।१५८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौधर्म स्वर्ग युगले वैडूर्य तपनीय इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्ययम विशिष्ट आवर्त शुभ
इन्द्रक महति महान, रहा "मेघ" प्रभ भी जहाँ ।।१५९।।

ॐ ह्रीं अर्हं मेघ प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, विशद "अभ्र" प्रभ भी कहा ।।१६०।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभ्र प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक रहा महान, है "हरिद्र" प्रभ भी विशद ।।१६१।।

ॐ ह्रीं अर्हं हरिद्र प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, श्री "पद्मप्रभ" पूजते ।।१६२।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मप्रभ प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, है "लोहित" प्रभ भी शुभम ।।१६३।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोहित प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, रहा "बज्रप्रभ" भी विशद ।।१६४।।

ॐ ह्रीं अर्हं बज्रप्रभ प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, "नंद्यावर्त" प्रभ भी रहा ।।१६५।।

ॐ ह्रीं अर्हं नंद्यावर्त प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, रहा "प्रभंकर" प्रभ विशद ।।१६६।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभंकर प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, "पृष्ठक" प्रभ शुभ जानिए ।।१६७।।

ॐ ह्रीं अर्हं पृष्ठक प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, "गज" प्रभ महिमा युत रहा ।।१६८।।

ॐ ह्रीं अर्हं गज प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, रहा "मित्र" प्रभ श्रेष्ठ तम ।।१६९।।

ॐ ह्रीं अर्हं मित्र प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध विमान, मध्यम विशिष्ट आवर्त शुभ।
इन्द्रक महति महान, विशद "प्रभा" प्रभ भी रहा ।।१७०।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभा प्रभ इन्द्रक आवर्त मध्यम विशिष्ट श्रेणीबद्ध विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितिय युगल सनतकुमार माहेन्द्र स्वर्ग स्थित श्रेणीबद्ध प्रकीर्णक विमान जिनालय जिनबिम्बों के अर्घ

सनत कुमार माहेन्द्र स्वर्ग में, श्री "अंजन प्रभ" रहा विमान।
श्रेणी बद्ध मध्यम विशिष्ट शुभ, जिसके जिन्हें महति महान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१७१।।

ॐ ह्रीं अर्हं सानतकुमार स्वर्ग युगले श्री अंजन प्रभ विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम आवर्त विशिष्ट प्रकीर्णक, श्री 'वनमाल प्रभ' रहा विमान।
जिसमें रहे जिनालय शाश्वत, जिनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१७२।।

ॐ ह्रीं अर्हं सानतकुमार स्वर्ग युगले श्री वनमाल प्रभ विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम आवर्त विशिष्ट प्रकीर्णक, श्रेणी बद्ध 'नाग प्रभ' मान।
रहे जिनालय जिसमें शाश्वत, जिनका हम करते गुणगान
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१७३।।

ॐ ह्रीं अर्हं सानतकुमार स्वर्ग युगले श्री नाग प्रभ विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध "गरुड़ प्रभ" मध्यम, है आवर्त विशिष्ट विमान।
महिमा शाली जिनगृह जिसमें, जिनका हम करते गुणगान ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१७४।।

ॐ ह्रीं अर्हं सानतकुमार स्वर्ग युगले श्री गरुड प्रभ विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्ययमावर्त विशिष्ट प्रकीर्णक, श्रेणी बद्ध 'लांगल प्रभ' जान।
महिमाशाली जिनगृह प्रतिमा, संयुत गाये श्रेष्ठ विमान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१७५।।

ॐ ह्रीं अर्हं सानतकुमार स्वर्ग युगले श्री लांगल प्रभ विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेणी बद्ध प्रकीर्णक मध्यम, मध्यमावर्त श्री "बलभद्र"।
है विमान में जिनगृह जिनकी, भाव सहित करते हैं कद्र।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१७६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सानतकुमार स्वर्ग युगले श्री बलभद्र प्रभ विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्री 'चक्र प्रभ' ब्रह्म स्वर्ग में हैं मध्यम आवर्त विशिष्ट।
श्रेणी बद्ध विमान प्रकीर्णक, में जिनगृह श्री जिन हैं इष्ट
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१७७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सानतकुमार स्वर्ग युगले श्री चक्र प्रभ विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ब्रह्म स्वर्ग में भी 'अरिष्ट प्रभ', मध्ययम आवर्त रहा विमान।
श्रेणी बद्ध विशिष्ट प्रकीर्णक, जिसमें जिनगृह है भगवान
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१७८।।

ॐ ह्रीं अर्हं सानतकुमार स्वर्ग युगले श्री अरिष्ट प्रभ विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सुर समीति प्रभ' मध्यम आवर्त, श्रेणी बद्ध विशिष्ट विमान।
है विमान जिसमें शाश्वत शुभ, जिनका हम करते गुणगान
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१७९।।

ॐ ह्रीं अर्हं सानतकुमार स्वर्ग युगले श्री सुर समीति प्रभ विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ब्रह्म प्रभ' मध्यम आवर्त शुभ, श्रेणी बद्ध विशिष्ट विमान।
जिसमें जिनगृह महिमा शाली, जिनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१८०।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म प्रभ मध्यम आवर्त विशिष्ट श्रेणी बद्ध प्रकीर्णक विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ब्रह्मोत्तर' मध्यम आवर्त शुभ, श्रेणी बद्ध विशिष्ट विमान।
महिमा शाली जिसमें जिनगृह, का हम करते हैं गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१८१।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मोत्तर प्रभ मध्यम आवर्त विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं नि. निस्वाहा।

'ब्रह्म हृदय' मध्यम आवर्त शुभ, श्रेणी बद्ध विशिष्ट विमान।
जिसमें जिनगृह महिमा शाली, जिनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१८२।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म हृदय श्रेणी बद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं नि. निस्वाहा।

'लांतव इन्द्रक' प्रभ आवर्त शुभ, श्रेणी बद्ध विशिष्ट विमान।
जिसमें जिनगृह महिलाशाली, जिनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१८३।।

ॐ ह्रीं लांतव इन्द्रक श्रेणी बद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मध्यम विशिष्ट 'शुक्र प्रभ' आवर्त, श्रेणी बद्ध शुभ रहा विमान।
स्वर्ग विमानों के हम पूजें, जिनगृह में जो है भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१८४।।

ॐ ह्रीं शुक्र प्रभ मध्यम आवर्त विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं निस्वाहा।

सहस्त्रार इन्द्रक प्रभ मध्यम, है श्रेणी बद्ध विशिष्ट विमान।
महिमा शाली जिसमें जिनगृह, जिनका हम करते गुणगान।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१८५।।

ॐ ह्रीं सहस्त्रार प्रभ मध्यम आवर्त विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं निस्वाहा।

'आनतादि प्रभ' मध्यम विशिष्ट शुभ, है आवर्त्त विशेष विमान।
महिमा शाली जिसमे जिनगृह, जिनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१८६।।

ॐ ह्रीं आनत प्रभ विशिष्ट श्रेणी बद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं निस्वाहा।

'प्राणत स्वर्ग' मध्यम आवर्त शुभ, श्रेणी बद्ध प्राकीर्ण विमान।
महिला शाली जिसमे जिनगृह, जिनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१८७।।

ॐ ह्रीं प्राणत प्रभ श्रेणी बद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पुष्पक प्रभ' प्रकीर्णक पावन, मध्यमावर्त्त श्रेणी बद्ध विमान।
महिमा शाली जिसमे जिनगृह, जिनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१८८।।

ॐ ह्रीं पुष्पक प्रभ प्रकीर्णक श्रेणी बद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्री शांतकर प्रभ' मध्यम है, श्रेणी बद्ध आवर्त्त विमान।
महिमा शाली जिसमे जिनगृह, जिनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१८९।।

ॐ ह्रीं शांतकर प्रभ श्रेणी बद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'आरण प्रभ' मध्यम आवर्त है, श्रेणी बद्ध शुभ रहा विमान।
महिमा शाली जिसमे जिनगृह, जिनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१९०।।

ॐ ह्रीं आरण प्रभ श्रेणी बद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अच्युत प्रभ मध्यम विशिष्ट शुभ पावन, श्रेणी बद्ध विमान।
महिमा शाली जिसमे जिनगृह, जिनका हम करते गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूज रहे हैं श्री जिन धाम।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र पद, करते बारम्बार प्रणाम ।।१९१।।

ॐ ह्रीं अच्युत प्रभ श्रेणी बद्ध विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्योनमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनुदिश श्रेणीबद्ध प्रकीर्णक विमान

अनुदिश "अर्चि" विमान कहाया, जिनगृह जिसमें पावन गाया।
अनुदिश में सोहे शुभकारी, जिनबिम्बों पद ढोक हमारी ।।१९२।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्चि प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"अर्चिमालिनी" अनुपम जानो, जिनबिम्बो जिन गृह युत मानो।
अनुदिश में सोहे शुभकारी, जिनबिम्बों पद ढोक हमारी ।।१९३।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्चिमालिनी प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"वज्र" रहा अतिशय मनहारी, जिसमें जिनगृह अतिशयकारी।
अनुदिश में सोहे शुभकारी, जिनबिम्बों पद ढोक हमारी ।।१९४।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्र प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"वैरोचन" पावन कहलाए, जिनगृह जिसमें पावन गाए।
अनुदिश में सोहे शुभकारी, जिनबिम्बों पद ढोक हमारी ।।१९५।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैरोचन प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"सोम" रहा प्राकीर्णक भाई, जिनगृह जिसमें है शुभदायी।
अनुदिश में सोहे शुभकारी, जिनबिम्बों पद ढोक हमारी ।।१९६।।

ॐ ह्रीं अर्हं सोम प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"सोम रूप'' गाया अतिशायी, जिसमें जिनगृह महिमादायी।
अनुदिश में सोहे शुभकारी, जिनबिम्बों पद ढोक हमारी ।।१९७।।

ॐ ह्रीं अर्हं सोम रूप प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"अंक" विमान में जिनगृह गाए, तीन लोक में पूज्य बताए।
अनुदिश में सोहे शुभकारी, जिनबिम्बो पद ढोक हमारी ।।१९८।।

ॐ ह्रीं अर्हं अंक प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है विमान "स्फटिक'' निराला, अकृत्रिम जिनबिम्बो वाला।
अनुदिश में सोहे शुभकारी, जिनबिम्बो पद ढोक हमारी ।।१९९।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्फटिक प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

साधू जो "रत्नत्रयधारी'', तप धारण करते अनगारी।
मरण समाधी करके जाते, अनुदिश में वे ही उपजाते ।।२००।।

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रयधारी प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनुत्तर श्रेणीबद्ध विमान

(छन्द मोतिया दाम)

अनुत्तर "विजय'' कहा शुभकार, जिनालय है जिसमें मनहार।
पूजते जिनके हम भगवान, प्राप्त हो हमको शिव सोपान।।२०१।।

ॐ ह्रीं अर्हं विजय प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

"वैजयन्त" रहा अनुत्तर मान, जिनालय जिसमें रहा महान।
पूजते जिनके हम भगवान, प्राप्त हो हमको शिव सोपान।।२०२।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैजयन्त प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनुत्तर पावन रहा "जयन्त", जिनालय जिसमें है जयवन्त।
पूजते जिनके हम भगवान, प्राप्त हो हमको शिव सोपान।।२०३।।

ॐ ह्रीं अर्हं जयन्त प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनुत्तर "अपराजित" है नाम, रहे जिसमें श्री जिन के धाम।
पूजते जिनके हम भगवान, प्राप्त हो हमको शिव सोपान।।२०४।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपराजित प्रभ इन्द्रक विमान जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनुत्तर "पंच" कहे जिनराज, कहे जो तारण तरण जहाज।
पूजते जिनके हम भगवान, प्राप्त हो हमको शिव सोपान।।२०५।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंच अनुत्तर इन्द्रक विमान स्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि:स्वाहा।

आठ भेद लौकान्तिक देखों, के हैं आठों दिश में जान।
ब्रह्म स्वर्ग के ऊपर रहते, ब्रह्म ऋषीवत महति महान।।
लाख चार शुभ सप्त सहस हैं, आठ सौ छह जिनगृह शुभकर।
जिनके श्री जिन बिम्ब पूजते, नत होके हम बारम्बार।।२०६।।

ॐ ह्रीं अर्हं लौकान्तिक देव विमाने 407806 जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

स्वर्ग लोक में देव वैमानिक, के हैं अतिशय देव विमान।
जिनमें जिनगृह जिनबिम्बों युत्, शोभा पाते महति महान।।
नौ सौ पच्चिस अरब तिरेपन, सहस सत्यानवे नौ सो जान।
अधिक अड़तालिस जिनबिम्बों पद, विशदभाव से है गुणगान।।२०७।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्ध्व लोके वैमानिक देव विमाने 925 अबर 53 लाख 97 हजार 948 जिनबिम्बेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

लाख तिरासी सहस सत्यानवें, तेईस ऊर्ध्व में जिन के धाम।
रत्नमयी अकृत्रिम शाश्वत, जिनगृह जिनपद विशद प्रणाम।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका गुणगान।
यही भावना भाते हैं हम, प्राप्त हमें हो पद निर्वाण ।।२०८।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्ध्व लोके वैमानिक देव विमाने 83 लाख 97 हजार 23 जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - स्वर्गों में इन्द्रक तथा, पंक्तीबद्ध विमान।
प्राकीर्णक भी जो रहे, करते हम जयगान।।

(ताटंक छन्द)

मध्य लोक में उच्च सुमेरू, एक लाख है योजन मान।
जिसके ऊपर स्वर्ग बताया, जिसमें रहे अनेक विमान।।
रत्नमयी रचना है सारी, अकृत्रिम जो रही महान।
जिनगृह में जिनबिम्ब मनोहर, अकृत्रिम अति आभावान।।१।।

दिव्य स्वर्ग हैं अतिशयकारी, जिनमें है देवों का वास।
सूर्य चन्द्र भी फीके पड़ते, रत्नों का है दिव्य प्रकाश।।
अकृत्रिम चैत्यालय जिनमें, शोभित होते अतिशयकार।
उच्च शिखर है जिनके ऊपर, महिमाशाली अपरम्पार।।२।।

स्वर्ण कलश हैं जिन पर पावन, ध्वज फहराएँ विस्मयकार।
तोरण द्वार सजे हैं अनुपम, अष्ट द्रव्य सोहें मनहार।
अष्ट दिव्य प्रतिहार्यों संयुत, घण्टा नाद हो मंगलकार।
सिंहासन पर श्री जिनेन्द्रजी, शोभित होते अतिशयकार ।।३।।

लम्बे सौ योजन के जिनगृह, उच्च पचहत्तर योजन मान।
पञ्चाशत योजन विस्तृत है, जिनगृह का उत्कृष्ट प्रमाण।।
मध्यम इससे अर्ध बताए, सर्वकथन उत्कृष्ट समान।
हैं जघन्य इससे भी आधे, जिनका हो आगम से ज्ञान।।४।।

तीन कोट जिनगृह को घेरे, चारों दिश हों गोपुर द्वार।
मानस्तंभ हो प्रति वीथी में, नवस्तूप रहें शुभकार।।
मणिमय कोट रहे अन्तर में, दश विध मंगल ध्वजा महान।
तृतीय परकोटे में भाई, चैत्यभूमि जिन बिम्बों वान।।५।।

चैत्य वृक्ष सिद्धार्थ मनोहर, जिनबिम्बों युत रहे प्रधान।
एक सौ आठ गर्भगृह पावन, सिंहासन पर जिनभगवान।
धनुष पाँच सौ ऊँचे गाए, पद्मासन से रहे जिनेश
बत्तिस युगल यक्ष शुभकारी, चँवर ढौरते जहाँ विशेष।।६।।

श्री देवी श्रुत देवी सोहें, जिनबिम्बों के पास प्रधान।
सनत कुमार सर्वान्ह यक्ष का, भी है अपना शुभ स्थान।।
जिनगृह में मुखप्रेक्षा नर्तन, क्रीडा न्हवन सुमण्डप जान
गुणगृह चित्रभवन गायन गृह, का भी अपना है स्थान।।७।।

दोहा – जिनगृह की रचना विशद, अतिशय रही महान।
गणधर भी कहके थके, को कर सके बखान।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्ग विमाने जिनालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा – जिनगृह श्री जिनबिम्ब शुभ, जग में पूज्य महान।
भाव सहित जिनका 'विशद', करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

।। प्रशस्ति ।।

''विधान रचयिता का अर्घ्य''

कर्मों का कर अन्त हमें अब, मोक्ष मार्ग पर बढ़ना हैं।
व्रत संयम धारण करके अब, स्वर्ग लोक पर चढ़ना हैं।।
स्वर्गलोक विधान कर हम भी, प्रभु की महिमा गाते हैं।
विधान रचयिता विशद सिन्धु पद, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ हूँ स्वर्गलोक विधान रचयिता श्रमणाचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति श्री वी. नि. 2547 मासोत्तयमासे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे दिल्ली प्रान्ते कुन्थुदाम्नाये श्री आदिसागराचार्य परम्परागत तत शिष्यः आचार्य श्री विशद सागर द्वारा श्री स्वर्ग लोक विधान रचितं इति शुभं भूयात।

स्वर्ग लोक जिनालय की आरती

तर्ज-टप्पा चाल

शाश्वत जिनगृह रहे स्वर्ग में, पावन अतिशायी।
उनमें जो जिनबिम्ब शोभते, पूज रहे भाई।।
जिनालय हैं जो अतिशायी.........।। टेक।।

सोलह स्वर्ग और ग्रैवेयक, अनुदिश में भाई।
पंच अनुत्तर के जिनगृह की, फैली प्रभुताई।।
जिनालय हैं जो अतिशायी.........।। १ ।।

इन्द्रक रहे विमान तिरेसठ, इन्द्रों सम भाई।।
रहे विमान के मध्य अकृत्रिम, जिन महिमा गाई।।
जिनालय है जो अतिशायी.........।। २ ।।

श्रेणी बद्ध विमान श्रेणियों, में सोहें भाई।
उनमें जिनगृह जिनप्रतिमाएँ, भाव सहित ध्यायी।।
जिनालय हैं जो अतिशायी.........।। ३ ।।

प्रकीर्णक भी हैं विमान शुभ, यत्र तत्र भाई।
इन्द्र सहित परिवार सभी जो, पूजें हर्षाई।।
जिनालय हैं जो अतिशायी..........।। ४ ।।

महिमा शुभ पंक्ती विमान की, जिन अतिशय गाई।
'विशद' भाव से पूज रहे हैं, हम परोक्ष भाई।।
जिनालय हैं जो अतिशायी..........।।५।।

आचार्य श्री विशद सागर जी की आरती

विशद सागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी सूरत निहारूँ, आरती उतारूँ.....।।
कर दो भव से पार-आज थारी आरती उतारूँ......।। टेक ।।

इन्दर देवी के तुम प्यारे-2
नाथूलाल जी के राजदुलारे-2
कुपी है जन्म का ग्राम आज थारी आरती उतारूँ।
विशद सागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।। 1।।

विराग सिन्धु से, मुनि दीक्षा
भरत सिन्धु से, आचार्य प्रतिष्ठा
करने चले हो कल्याण, आज थारी आरती उतारूँ।
विशद सागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।। 2।।

जगमग दीपक, हाथों में लेकर-2
गुरु चरणों में, शीश झुकाकर-2
संघ के पालनहार, आज थारी आरती उतारूँ
विशद सागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।। 3।।

रचयिता - मुनि विशाल सागर